International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to Higher Education For all Subject

Issue : December - 2023
Vol-I

ISSUE- 12

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

IMPACT FACTOR 6.376 (SJIF)

ISSN - 0975-3486 (Print)
ISSN- 2320-5482 (Online)
RNI Registration Number-RAJBIL2009/30097

www.ugcjournal.com

Dr. Krishan Bir Singh
Editor in Chief

International Level Double Blind Peer Reviewed, Refereed, Indexed Research Journal, ISSN(Print)-0975-3486, E-ISSN-2320-5482,RNI-RAJBIL-2009/30097, Impact Factor-6.376(SJIF), December-2023,VOL-LISSUE-12

Research Paper - Hindi

भारतीय भाषाओं के साहित्य में जीवन मूल्य

डॉ0 अशोक कुमार

सह आचार्य, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक और धार्मिक परिदृश्य उस राष्ट्र की जनता की चिंतन तथा बौद्धिक क्षमता का आईना होता है। यह उस देश कीजनता और बुद्धिजीवियों पर निर्भर करता है कि अपने राष्ट्रीय की तस्वीर दुनिया के सामने कैसे पेश करना है? उस राष्ट्रीय की तस्वीर का आधार उस देश की भाषा है, क्योंकि भाषा ही पूरे देश के परिवेश को गहराई से प्रभावित करते हैं। मनुष्य अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जो मौखिक साधन अपनाता हे, वह भाषा है। यद्यपि मनुष्य जब भी संकेतों आदि के द्वारा कुछ भावों की अभिव्यक्ति तो करता है परन्तु भावों को सुक्ष्म रूप और स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त करने का साधन भाषा ही है। यद्यपि मूल्य का अभधात्मक अर्थ दाम, बाजार भाव, धन आदि है। प्रत्येक समाज मे मूल्य का निर्माता मनुष्य स्वयं है जो युग क अनुकूल मूल्य का निर्माण करता है, मूल्यों के संदर्भ में अज्ञेय का मत है "मूल्य वह है जिसका महत्व है, जिसको पाने के लिए व्यक्ति और समाज चेष्टा करते हैं जिसके लिए वे जीवित रहते हैं और इसके लिए वह बड़े से बड़ा त्याग कर सकते हैं"[1] इतिहास साक्षी है कि भारत में असंख्य भाषाएं और बोलियों का अस्तित्व है, लेकिन अलग–अलग भाषाओं के साहित्य की अपनी विशेषता के कारण उन भाषाओं में जीवन मूल्यों के रंग में भारतीयता एवम जीने का ढंग विद्यमान है। चाहे साहित्य वैदिक संस्कृत का हो या लौकिक, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश भाषा का साहित्य हो या केरल का मलयालम, कर्नाटक का कन्नड़, बंगाल का बंगला, पंजाब का पंजाबी, असम का असमिया, गुजरात का गुजराती उड़ीसा का उड़िया आदि सभी भाषाएं अपनी सभी विशेषताओं के बावजूद भी संपूर्ण भाषाओं के साहित्य में भारतीय जीवन मूल्यों को देखा जा सकता है।

प्रत्येक काल में मानव व्यवस्थित एवं सुविधा पूर्ण जीवन जीने के लिए कुछ नियमों का निर्धारण करता है, जो समय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। व्यवहारिक जीवन में इन नियमों के अनुसरण को मूल्य की संज्ञा दी गई है। यह मूल्य मानव व्यवहार को व्यवस्थित दिशा प्रदान करते हैं। मानव द्वारा निर्मित यही मूल्य समय के अनुसार परिवर्तित होते हैं। मानव जीवन मूल्यों में व्यक्तित्व मूल्य, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, दार्शनिक मूल्य आदि आते हैं। वैदिक संस्कृति से ले कर अब तक भारतीय भाषाओं के साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति की गई है। किसी समूह के विकास मे जीवन मूल्यों के जो स्वरूप विकसित होते हैं, वे उस समूह के संस्कृति के द्योतक हो जाते हैं। डॉक्टर शायमाचरण दूबे ने अपनी पुस्तक "मानव और संस्कृति" में बताया है – "वर्णित रूप में संस्कृति सामाजिक यथार्थ पर आश्रित एक ढांचा, आदर्श चित्र होती है। समाज के जीवन में जो विचार और व्यवहार लक्षित होते हैं, उनके आधार पर हम उन नियमों और सिद्धान्तों को शाब्दिक रूप देने का यत्न करते हैं। जिन पर वह विशिष्ट संस्कृति आश्रित रहती है।"[2] साहित्य और जीवन मूल्य का अटूट संबंध है। जो मानव जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाने में सहायत होते हैं। इतिहास गवाह है कि वैदिक संस्कृत के समय से ही भगवान राम, कृष्ण ऋषि मुनियों के माध्यम से व्यक्तित्व में नीति, धैर्य, दया, करूणा, सेवा, त्याग आदि मूल्यों के दर्शन होते हैं किसी भी भाषा का साहित्य उस भाषा की भावनाओं का दर्पण होता है। अलग–अलग भाषाओं की साहित्यिक

OPPO Reno8 T 5G